कोई इकली जैयो मत गोरी।।

जो तू जावैगी पनघट पै, ठाड़ो पावैगी पनघट पै
गगरी फुरवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी दधी बेचन, आगे पावैगी नंदनंदन
माखन लुटवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी जमुना पै, मोहन पावैगी जमुना पै
फरिया चुरवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी वन कुंजन, बैठ्यो पावैगी मनमोहन
वा ते बतरैयो मत गोरी।।

------o------

मेरे पीछे ते मारै हेला, ये नंद जू को ढोटा अलबेला।।
घाट बाट औ गली गिलारे, डोलै बन के छैला।
लै लै मेरो नाम बुलावै, जो कहूँ मिलै अकेला।
पीताम्बर को झालौ देवै, देख कुंज की गैला।
एक दिन मिल्यो न्हात यमुना पै, दै पानी को रेला।
सास ननद के बीच हों बैठी, अचक मार गयो डेला।।

------o------

श्याम नैयनों की मारै कटार, पनघट नांय जाऊं।।
आगै चलूं तो आगै आवै
पीछे मुड़ू तो संग मुड़ जावै
ऐसी इकली फंसी बिच धार, पनघट..।
बैठ जाऊं तो बैठे संग-संग
छूवन लागै सबरो अंग-अंग
वो तो विनती करै बार-बार, पनघट..।
मैं ही ऐसी कहा अनोंखी
मैं ही लागों वाको चोखी
भंवरा सो करै गुंजार, पनघट नांय जाऊं।।

------o------

इंडुरी मेरी लै गयो साँवरिया।।

पनघट पै वह आयो रसिया, मैं भर रही री गगरिया।
गगरी भरके चली मैं उचवे, पकर्‌यो कर लंगरैया।
झटक छुड़ाय कलैया अपनी, ओढ़न लगी मैं चुनरिया।
इंडुरी लै गयो नंद महर को, देखत मैं रही डागरिया।
इंडुरी संग मेरो मनहू लै गयो, कर गयो मोकूं बावरिया।
जाने कैसे जादू कर गई, वाकी बांस की बंसुरिया।।

कन्हैया मेरी गगरी उचाय।।

इकली ठाड़ी भरकें गगरी, कोई न उचवाय।
ऐयो रे मेरे नंद के खिलारी, दीजो हाथ लगाय।
जिठानी मेरी बैरिन भई, देवुरानी सोर मचाय।
मैं इकली कहा कहूं रे रसिया, तू ही गैल बताय।
जब जब तेरी बंशी बाजै, मोकूं नींद न आय।
पलका पै करवट बदलत ही, सिगरी रात बताय।
जब-जब तू गैयन को टेरै, ऊंची बांह कराय।
देख देख तेरी मधुरी छवि, मेरो मन बिक जाय।।

------o------

नंद जू को छैया अलबेलौ,
मेरी मटकी में मार गयो डेलो।।

गगरी भरी चली मैं उच के, आयो कहूंते छैलो, मेरी.
चूनर सारी सबरी भीजी, पानी सबरो फैलो, मेरी.
चूनर मेरी लग्यो निचोरन, कारो मन को मैलो, मेरी.
कबहू पनघट औ यमुना तट, वंशी बजावै अकेलो, मेरी.
कबहूं घेरै खोर सांकरी, लै ग्वालन को मेलो, मेरी.

ले गयो चीर मुरारी, कन्हैया लाल बनवारी।।

लैकें चीर कदम चढ़ बैठे
हम जल माहिं उघारी, कन्हैया..।
चीर हमारी देओ लालन
हमको लाज लगै भारी, कन्हैया..।
चीर तुम्हारो तबै मिलैगो
जल ते है जाओ न्यारी, कन्हैया..।
जल ते न्यारी कैसे होवैं
लोग हंसैं दै तारी, कन्हैया..।
लोग हंसैं तो हंसवै देओ
हम हैं पुरुष तुम नारी, कन्हैया..।
जल के पार बांध बांह आई
चीर दियो गिरधारी, कन्हैया..।
बोले श्याम सुनो ब्रज बाला
पूजा सफल तुम्हारी, कन्हैया..।
ब्रत कर देवी पूजी तुमनें
सिद्ध भईं सब प्यारी, कन्हैया..।
तुम संग रास करूं वृन्दावन
यमुना तट सुखकारी, कन्हैया..।।

कान्हा काहे को हमारी तैनें फोरी गगरी।
प्यारी काहे को हमारी तैनें छीनी बंसरी।।

मैं तो यमुना नीर भरन गई पायो कुँवर कन्हाई
इकली मोते बीच बनी में नाहक रार मचाई
गगरी फोरी तैनें दीनी पीछे कंकरी।
बंसी बिन मैं चैन न पाऊं बंसी देओ हमारी
जो नहिं बंसी देओ भामिनी का गति करूं तिहारी
ये बंसी प्राणन ते प्यारी देखो हमरी।
ग्वाल बाल नित ही लैकें क्यों रोकैं गैल हमारी
नित प्रति रार मचावै मोते नटखट कृष्ण मुरारी
ठाड़ो पनघट रार मचावै रोकै मेरी डगरी।
काहे रार बढ़ावै मोते ओ गोरी ब्रजनारी
लै गई बंसी देओ मेरी ओ बरसाने वारी
न्याय करैगी भानु कुंवरि दाता जो भोरी-भारी।।

------o------

देख्यो री आज बांका सांवरिया।।

मैं यमुना जी न्हाय रही थी,
आयो री वो तो यमुना किनरिया।
कमल सो मुख ओ चंदा सी चितवन,
री अँखियां जैसे कमल पंखुरियां।
अधरन मधुरी बंसी बाजी,
भूल गई मैंतो भरन गगरिया।
न्हावन धोवन भूल गई मैं,
धुन सुन रुक गई यमुना लहरिया।
लहंगा ओढ़ पहर लई चूनर,
ऐसी बाजी वो बैरिन बंसुरिया।
जैसी बंसी तैसो बजैया,
बिक गई मैं बिन मोल गुजरिया।।

------o------

यमुना पै श्याम बुलाय गयो री।।

सास ननद जिठनी बिच बैठी,
पीताम्बर छोर हिलाय गयो री।

कदम ओट ह्वै मन कौ रसिया,
झालो मोहि दिखाय गयो री।
दूर जाय के वन कुंजन में,
बंशी मधुर बजाय गयो री।
बंशी में लै नाम हमारो,
गीत रसीले गाय गयो री।।

------o------

पनघट पै आयो नंद लाल,
सखी लटक रही बैजंती माल।।

वो आवत गगरी भरन लग्यो
भर-भर के मोय उचावन लग्यो
झट घूंघट खोल मेरो छुवत गाल, सखी..।
मुख मोर चली मेरे संग चल्यो
मैंतो कमल कली वोतो भंवर बन्यो
पीछे ते गावै रस के ख्याल, सखी..।
यह नंद महर को है रसिया
कैसी मीठी बजावै है बंसिया
जादू चेटक के करै है जाल, सखी..।।

आई-आई नंद के रे जुलमी, मत जा मत जा रे बेदरदी।।

ऐसी तैनें मारी कांकरिया
फूटी जो मेरी गगरिया
भीजी-भीजी नंद के रे जुलमी रे मत जा..।
भीजी हीरा जड़ी मेरी अंगिया
बिगरी मेरी सारी औ चुनरिया
भाजै भजै काहे अरे जुलमी मत जा..।
पहले पहल मैं आई बहुरिया
कैसे जाऊं सब हंसैं गामरिया
कैसी करी तैंनें नंद के रे जुलमी मत जा..।
आज तैंनें बहुत अनीती करी
ऐसी देखी न सुनी कहुं अचगरी
डरै नैंक न नंद के रे जुलमी रे मत जा..।।

------o------

उंमड़ रह्यो उमड़ रह्यो,
दरसन को मेरो मन उमड़ रह्यो।।

निरमल नीर बहै यमुना को,
न्हावन को मेरो मन उमड़ रह्यो।

यमुना तीर रहै एक ढोटा,
देखन को मेरो मन उमड़ रह्यो।
सुन्दर स्याम सरीर सलोना,
परसन कों मेरो मन उमड़ रह्यो।
मधुरे मधुरे बंशी बजावै,
सुनवे को मेरो मन उमड़ रह्यो।।

------o------

ए कान्हा छांड़ो न मेरी बैंया।।

पायल बाजै छन नननननन
बिछुवा बोलैं झन नननननन
चुरियां खनकैं खन नननननन
ए कान्हा सुन लेंगी ब्रज की लुगैया।
अटकै मत फूटैगी गगरी
सूनी नांय यमुना की डगरी
चतुरन की यह गोकुल नगरी
ए कान्हा मान परूं तेरे पैयां।।

------o------

चोर शिखामणि

ऐसौ ढीठ भयौ नंदलाला, ब्रज में धूम मचायो है।।

मैया री या ब्रज कौ बसिवौ
हाय कठिन है ह्यां कौ रहिबौ
नये-नये ऊधम कौ सहिबौ
सास नन्द ते होय फजीतो, नित कौ दायो है।
ग्वाल बाल लै घर में आवै
बछरा खोल कहूँ छिप जावै
बछरा कूदें वह भज जावै
वन-वन बछरा ढूँढन जावैं, गैल भुलायो है।
पलका पै मैं सोय रही दिन
अचक अचक आयो ताही छिन
पाटी ते बांध्यो चोटी तिन
चोटी खोलत माखन सबरौ, झट गटकायो है।
पिछवारे ते हेला मारे
गई देखवे घूँघट धारे
तौ लौं जुलम कियौ वह भारे
घर में दूध दही मिसरी कौ कियौ सफायौ है।।

मैया मेरे बैर परी हैं ब्रज की गोपी फरिया फार।।

लालाजी कह मोय बुलावैं
घर में पट्टा पै बैठावैं
हंस हंस सैनन ते बतरावैं
मैया बेटा हम दोउ भोरे भोरेन को न गुजार।
विनती कर माखनै खवावैं
वंशी सुन के नांच नचावैं
जान न देवै आँख दिखावैं
जब मैं चलूं लगावैं चोरी, नाहक ठानैं रार।
पनघट पै ये झालो देवैं
ना जाऊँ तो ऊधम देवैं
नये ढोंग नित ही रच लेवैं
फोरैं खुद मटकी पै मेरो नाम लगावैं नार।
इक दिन खोर सांकरी पाई
बोली मैं करवाऊँ सगाई
कारे की को करै सगाई
मैंने कही यहाँ पै तेरी नाय गरैगी दार।
आपै दूध दही लुढ़कावैं
मेरे सिर पै दोष लगावैं
सैन चलावैं लिपटत आवैं

झूठे चोर बतावैं मोते ऐसी खावैं खार।
आपै घूँघट खोल दिखावैं
खोल्यो घूंघट श्याम बतावैं
पानी में ये आग लगावैं
देन उराहनो छिन-छिन आवैं, मैंने मानी हार।।

------o------

सगाई तेरी फिर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।।

सुनलै प्यारे नंद लाड़ले, चतुर छैल हरजाई,
सुन-सुन के चोरी की बतियां, फिर गये बाम्हन नाई,
बात ये बिगर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।
दूध दही माखन बहुतेरो, घैया और मलाई,
काहे मांगे दान दही कौ, गैल गिलारे जाई,
समझ कब पर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।
तेरे कारन नंदराय की, घर-घर होय हंसाई,
बरसानें की राजकुंवरी सों, तोरी बात चलाई,
बुराई तेरी है जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।।

------o------

माखन चोरन गये श्याम,घर काऊ चतुर सुनारी के।

पहले झांक रहे बाहर ते
आहट लेन लगे चुपके ते

भीतर बैठी छिप चोरी ते
जान न सकै श्याम घुस बैठे, लालच माखन के।
छींके पै ही धरी कमोरी
चल्यो खाट चढ़ करवे चोरी
देख रही छिप के वह गोरी
लई उतार कमोरी, माखन खायो मन भर के।
झपट पकर लई नन्द कौ लाला
संग लै चली धींगरी बाला
माखन लग्यो हाथ औ गाला
आगे बाला पीछे लाला, चलीं महल मां के।
घूंघट मार चलीं ब्रजनारी
पति कौ रूप धर्‌यो बनवारी
जाय कही जसुदा महतारी
हम लाईं हरि चोर मात, आ बाहर महलन ते।
देखत हंसी यशोदा मैया
बोली यह नहीं कुँवर कन्हैया
ये तो तेरौ सजन लुगैया
भई सरम ते पानी, देखत मुख घरवारे के।।

चोरी की सब झूठी बात मात तैनें सांची जान लई।
झूठीं ये सब ब्रज की बाला
झूठै झूठ बजावैं गाला
झूठै आय लगावैं जाला
झूठैई नाम लगाय सबन नें बहुतै ऐब दई।
तेरौ मैं छोटो सौ लाला
भोरे मेरे ब्रज के ग्वाला
भोरन कूं ये समझै ठाला
जहाँ तहाँ ये करैं बुराई इननें बैर ठई।
बाहर मोते हौले बोलैं
मीठे-मीठे रस कूं घोलैं
बिना मोल दधि मटकी खोलैं
हँस-हँस मनुआ चोरैं मेरौ बेनु चुराय गईं।
एक दिना की सुन लै मैया
ये तो बांधन लागी गैया
बन्दर एक धंस्यौ धमधैया
माखन दूध दही सब खायौ मोपै कुपित भईं।
मुस्क्यावै सुन जसुदा रानी
तेरी बात नांय है छानी
भयौ लाड़िलौ तू मनमानी
पर घर में जायवे तें लाला सीखै बात नई।।

बन्दर लीला

धनि धनि ब्रज मण्डल के बन्दर
हरि संग चोरी करवे जांय।।

पहलै भवनन पर चढ़ जावैं
उछर कूद कै धूम मचावैं
खिर-खिर खौं-खौं सबन डरावैं
लै डंडा जब चढ़ी गोपिका छत से सब भग जांय।
तब तक हरि नीचे भवनन में
लगे अचक भांड खखोरन में
माखन दूध दही चोरन में
मिसरी बूरा लड़ुवा गूंजा ग्वाल सबै समगांय।
छत पर चार पांव के बानर
घर भीतर द्वै पांये बानर
नीचे ग्वाला ऊपर बानर
भई फजीती बहुत, चोर सब भागे, पकर न जांय।
बाहर दूर सबै मिलि आये
बांट-बांट के भोग लगाये
हरि ने बानर खूब झिकाये
हरि के कर कमलन सों लै लै बानर माखन खांय।

रामादल के ये हैं बानर
लंका जीत्यो प्रबल युद्ध कर
मारे पापी दुष्ट निशाचर
त्रेता करी सहाय यहाँ दधि चोरी भये सहाय।

------o------

ठगिया बड़ौ नन्द कौ छैया,ये तो चोरन कौ सरताज।

दादा गुरू चोर मण्डल कौ
बहु छल जानैं दधि चोरन कौ
खावै फोरै दधि भाजन कौ
ग्वाल बाल चेला चंटारी श्याम गुरू महाराज।
सखा एक बन सखी नवेली
मेरी देवरानी सौं बोली
भेज जिठानी अपनी भोली
बाके पीहर ते मैं आई मिलवे को इक काज।
मैं सुन गई दौर मिलवे को
पहुँची ढूंढ़ न पाई वाको
ढूंढ़न लगी बहुत मैं ताको
लौटी घर को तब समझी यह धोखे कौ सब साज।

दूरइ ते देखे सब ग्वाला
निकसे घर ते हंस दै ताला
गूंठा मार रह्यो नन्दलाला
पछताई मैं बहुत गिरी मोपै कैसी यह गाज
दूर खड़ी चोरन की टोली
हँस-हँस मोतें करैं ठिठोली
बोलैं मोते तू है भोली
सूने घर ते हमने टारे बन्दर खा रहे नाज
घर कूँ छोड़ कबहु ना जैयो
चोरी कौ मत नाम लगैयो
हमनें करी भलाई सुनियो
तेरे घर ते कुत्ता बिल्ली बन्दर टारे आज
घर में घुसी बहुत पछताई
दूध दही की करी सफाई
सद लौनी सबरी गटकाई
खायो जो कछु हाथ पर्‌यो फैलायो जल बेकाज

------o------

मान लीला

मन्दिर शिखर मानगढ़ ऊपर राधा मानविहारी लाल।

पर्वत ब्रह्माचल बरसाने
राधा माधव रस सरसाने
बिहरैं प्रेम भरे मन माने
गहवरवन के पश्चिम न्यारी चोटी चमकै भाल।
बैठी सुन्दर कीरति बाला
नटखट चंचल नंद के लाला
कछु लंगराई करी गोपाला
गोरी भरी गुमान रूप की मान कियो तत्काल।
बिनती बचन सुनै नहिं प्यारी
दर्पन दिखरावैं गिरिधारी
नहिं देखैं अधरन फरकारी
प्रियाचरण निज मोरमुकुट ते सहरावैं गोपाल।
सखी सहचरी मेल करावैं
हरि नैंनन आँसू ढरकावैं
कबहु गावैं नृत्य दिखावैं
नाना भांति रिझावैं तब कहुं रीझै गोरी बाल।।

चढ़ पर्वत ऊपर बैठी, खेलत में प्यारी रूठी।।
गहवरवन में रास रच्यो, ता थेई तत्त थेई बोलै है,
नाचत अगनित फिरकैंया लै,तब सम को दिखरावै है,
ताल अनेक ताल माला में, नाचत घूम बनैठी।
उरप तिरप गति आड़ कुआड़हि लै दिखाय संग नांचै हैं,
अद्‌भुत लास्य देखि प्यारी कौ वाह-वाह पिय भाखै है,
एक बोल पै टोक्यो लालन ठान्यो मान अनूठी।
चढ़ी मानगढ़ ऊपर मान कियो राधा ठकुरानी हैं,
सब ठाकुर कौ ठाकुर रासबिहारी की महारानी हैं,
हाथ जोड़ पिय आगे ठाढ़े तबहू तिय नहि तूठी।
जब जब प्यारौ आगे आवै, पीठ देय मुख फेर्‌यो है,
मुकुट छुआवत चरनन में तब हाथ पकर कैं टार्‌यो है,
सब सिंगार उतार धरे फेंकी पिय दई अंगूठी।
पीताम्बर की छांह करैं, तब हटै उठै जब व्यारै है,
नयन न देखत देखत कोरन छू नहिं जाय बचावै है,
सुनै न दीन वचन कानन में देत आंगुरी झूठी।
सखी मानगढ़ वारी की पिय किय अधीनता गिरिधारी,
वाके जतन प्रिया तब रीझीं निरखीं प्यारे बनवारी,
पिय याचत मुख बीरी प्यारी दीनी करके जूठी।।

मन्दिर मान मानगढ़ ऊपर गहवरवन बरसाने में।।
इकली ऊँची शिखर निराली
चारों ओर झुकी हरियाली
बिहरैं नित्य प्रिया वनमाली
प्रीति रंगीली खेल रंगीले नित गहवर वन में।
सकल कला की मूल स्वामिनी
गायी एक दिन नई रागिनी
करैं अचम्भौ सकल कामिनी
सीखन लगे श्याम प्यारी सों अति उत्कंठा में।
स्वर विस्तार प्रिया समझावैं
राग वक्र गति गाय बतावैं
मोहित पिय पूछत ही जावैं
प्यारी कोयल के कोमल सुर सुनवे लालच में।
रूठी भामिनी भानुदुलारी
बोले ते नहिं बोलीं प्यारी
देखे नहिं देखे सुकुमारी
कोमल चरन छुवन नहिं देवैं सदृढ़ मान मन में।

बोले पिय सुन बिनती प्यारी
तुम उदार गुरु बनी हमारी
सीखी रागिनी कृपा तिहारी
तुम्हरे मीठे स्वर सुनवे को फिर-फिर पूछ्यौ छल में।
वही राग हरि गाय सुनायौ
सुन वह राग मान बिसरायौ
रीझीं प्यारी कंठ लगायो
प्रणय मान जाने ना नीरस कलह मान सब जग में।

------o------

ब्याहुलौ

वृषभानुनन्दिनी सजनी बनी, प्यारी सजनी बनी।
कुंज महल में ब्याह रचायो, सखियन के मन ऐसी ठनी।
श्री राधा को करौ दुलहिनी, दूलह याकौ श्याम धनी।
हरद चढ़ाय बंधाय सेहरा गीत गवावैं सकल जनी।
कछु तो सखियाँ बनी घराती, सजी बराती बनी ठनी।
चढ़ी बरात बजे बाजे सब दूलह की घुड़चढ़ी मनी।
पाणिग्रहण कराय लली कौ लाल भये राधारमनी।

सखी पुरोहित मंत्र उचारैं, पड़ी भाँवरी सात गनी।
कंकण छोरन चले लालजी, पकर न पावैं छोर तनी।
प्रेम चढ़्यो तन काँपन लाग्यो, हँसी सहचरी ताल धुनी।
दूध पियौ यशुदा कौ तौहू, भई निबलता कुल लजनी।
गोरे मात-पिता तुम कारे, बात तिहारी लाज घनी।
तन के कारे मन के कारे, ब्याही कैसे शशिबदनी।
लली चरन पादुका लाय के, पुजवावे सब मृदु वचनी।
जान मान कें पूज रहे हरि, भाग मान मन्मथमथनी।
गाँठ ज़ोर के दई देवता, पूज रही जोरी कमनी।
अपने मन की आशा मांगो, बोली सखी सुभग सदनी।
वरनी ने मांग्यो बरना की, बनै बान लजनी समनी।
हरि बोले वृन्दावन देवा, कबहुँ न रूठे मनबसनी।
गाय रहीं सब गीत ब्याह के, गारी मीठी मधुहंसनी।
नांच रहीं भई घोर कौंधनी, पायल और बिछुवा बजनी।
बज रहे ब्याह बंधाये कुञ्जन, जोरी कंचन हीरकनी।।

------o------

भानु की पौरी झाँकै श्याम,
आयकें लुक-छिप चोरी ते।।

नजर बचाय सबन की मोहन
लागें श्री राधा के गोहन
छद्म अनेक धरे मुख जोहन
महलन ड्योढ़ी उझकै, आँख मिलावैं गोरी ते।
श्री वृषभानुराय की बेटी
मोहन लाल लाय उर भेटी
गाढ़ी प्रीति कान सब मेटी
लिपटी ज्यों दामिनि बादर ते, भुज भर कौरी ते।
वट संकेत मिले वे कबहूँ
प्रेम सरोवर खेलैं कबहूँ
श्री गहवरवन विहरैं कबहूँ
कबहूँ इकले कबहूँ सखियन सांकरि खोरी ते।
राधा श्याम सगाई जब ते
कमल घिर्‌यो जैसे भँवरा ते
सखी रूप धर्‌यो जमाई ते
चूनर ओढ़ भानु मन्दिर में रहै छिछोरी ते।।

कालीदह

वृन्दावन कालीदह पै मोहन, गेंद कौ खेल मचावै री।

जहां कालीनाग रह्यो भारी
सौ-सौ फन कौ वो विषधारी
जाके विष ते उड़ते पंछी जर भुंज नीचे गिर जावैं री।
खेलत में मोहन गेंद लई
औ जमुना जल में फैंक दई
उठ श्रीदामा रिस खाय कृष्ण ते वही गेंद मंगवावै री।
फैंट बाँध चढ़ गये कदम पै
कूद परे दह में ऊँचे ते
भारी भयो धमाकौ विषकौ जल तट चढ़ उफनावै री।
देख्यो नाग श्याम सुन्दर कौ
रूप लजावै जो चन्दा कौ
हँस हँस निरभय खेल रह्यो औ मधुर मधुर मुस्कावै री।
फन बढ़ाय काली फुँकारै
आँखन ते बरसै अंगारे
जीभ निकार दौर मोहन कौ अंग लपेटा खावै री।

ब्रजवासी ढूँढत ह्वां आए
देख-देख रोये पछताए
नंद यशोदा दह में कूदत ते दाऊ बगदावै री।
दुखी देख सब को मनमोहन
अंग बढ़ाय कै तोर्‌यो बन्धन
कूद चढ़े ऊँचे फन पै तब ब्रजगोपी सुख पावैं री।
नाचन लगै कृष्ण मतवारे
एक-एक सब फन बैठारे
बाजे बहुत बजाय देवता फूलन कौ बरसावैं री।
शरण-शरण कह नागिन धाईं
तुम रक्षक हे कृष्ण गुसाईं
चरण चिन्ह दै दया करी हरि भय ते मुक्त करावैं री।
भेज्यौ नाग द्वीप रमणक को
नाथ्यो काली जल निरमल को
आनन्द ब्रज में भये सबइ जमुना में गोत लगावैं री।।

------o------

काली दह ते निकस कें आयो री नंदलाला कुंवर कन्हैया

काली के फन पै ठाड़े हरि
सौ फन पै मणियां चमकैं झरि
मणियन पै नाच दिखायो री नंदलाल..।
नागिन की पूजा लै नटवर
मणियन की माला पहरै उर
नयो पीताम्बर धार्‌यो री नंदलाल..।
कमलन की माला लटकै है
जैसेई तट पै पांव धरै है
यशुदा कंठ लगायो री नंदलाल..।
मैया के स्तन दूध चुचावै
सबके नैना भरि-भरि आवैं
जै-जैकार करायो री नंदलाल..।
आज्ञा लैकें नाग सिधार्‌यो
यमुना जल निर्मल कर डार्‌यो
ब्रज में मंगल गायो री नंदलाल..।।

------o------

श्री गहवर-कुञ्ज लीला

दिखाय दै प्यारी मुख अपनों राधे वृषभानु-दुलार।
दिखाय दै नैना मतवारे रसिया पिय नन्द-कुमार।।
गोरो मुख चन्दा सों जा पै सटकारी लट झूमती,
सुधापान हितकारी नागिन मुख चन्दा को चूमती,
सटका दै प्यारी लट लटकी राधे वृषभानु-दुलार।
नील कमल सौ सुन्दर मुख पिय जापै लटुरी झूमती,
भ्रमर भांति रस पान करन कौ उड़ कमलन दल टूटती,
उठा दै लटकी लटुरी रसिया पिय नन्द-कुमार।
शुक सी सुन्दर नासिका नथ है सुनहरी सोहनी,
उड़ नहि जावैं कीर कहूँ वह फन्दा सी मनमोहनी,
हटा दै प्यारी पट घूँघटा राधे वृषभानु-दुलार।
मधुरस भरे होठ दोनूं हैं बिम्बाफल से लाल,
वंशी की वंशी में पोये रसफल गोरे गाल,
सुना दै प्यारे धुन मुरली रसिया पिय नन्द-कुमार।।

------o------

राधा-माधव खेलैं गहवरवन में दिव्य प्रेम के खेल।।

नित्य विहार भूमि गहवर वन
चिन्मय धाम नित्य वृन्दावन
लता बेलि द्रुम कुंज निकुंजन
सोरह बरसी श्यामा सोरह बरसो नागर छैल।

झलकै दिव्य देह दरपन से
नील देह में श्यामा दरसे
गौर देह में मोहन दरसे
अपनी-अपनी झाँकी देख करैं अचरज की केल।

प्रिया रूप में श्याम देखकर
कहैं श्याम यह कौन श्याम नर
श्याम देह में प्रिया देखकर
श्यामा कहें श्याम सों आई कौन नारि अलबेल।

दिव्य देह की अद्भुत लीला
सहचरी देखें तत्सुख लीला
रस पीवैं नहिं गुठली छीला
रसिकन संग मिलै दुर्लभ रस प्रिया कृपा की गैल।।

राधा सोने हू ते गोरी, सोनो देख लजायो है।।
झमकै रूप अधिक सोने ते
झलकै चमक अधिक दरपन ते
द्वै द्वै श्याम दिखैं हियरे ते
अपने रूप देख कै मोहित श्याम लुभायो है।
मोहन कहैं सुनहु मृगनयनी
ये द्वै युवक कौंन पिक बैंनी
सखी बनाय मोहि सुख दैनी
हम द्वै सखी श्याम द्वै साजन मेल सुहायो है।
सुन मुसकावैं गोरी बाला
अति मोहित जाने नन्दलाला
पहिराई लैकर मणिमाला
बिम्बन में हू माला देखत भरम भगायो है।
विहरैं चिन्मय देह सदा ही
पाँच भूत मल मैथुन नाहीं
शुद्ध प्रेम मय रूप कहाही
लीला शक्ति युगल की नाना खेल दिखायो है।।

नैना ही में नैना देखैं नैना रूप दिवाने हैं।
अँखियन में अँखियन को डारे
झूम रहे गलबैंयन प्यारे
प्रेम वारुणी के मतवारे
इक टक भये पलक ना डारैं ये मनमाने हैं।
राधा माधव परम सनेही
एक प्राण यद्यपि द्वै देही
प्रेम तत्व द्वै रूप धरे ही
नित्य विहार करैं गहवर वन रसिकन जाने हैं।
विहरैं सदा अनादि काल ते
अब हू विहरैं रसिकन मत ते
लीला मिटै न महाप्रलय ते
रूप नयो नित इक दूजे को नहिं पहचाने हैं।
नैना मार करैं बानन ते
नैना ही झेलैं घातन ते
काजर धार चढ़े सानन ते
चारों नैन लड़ें जोधा से रूप रिझाने हैं।

यद्यपि श्याम हरिप्रिया गौर तन
काया अलग भिन्न सब अंगन
किन्तु एक से चारों नैनन
श्याम श्वेत और कारे नैना हिये समाने हैं।।

------o------

अपने-अपने रूपन देखैं इक-दूजे की अँखियन माहिं।।

एक किशोरी राधा गोरी
चौंसठ कला चतुर पै भोरी
दूजै पिय चतुर सांवरो री
गौर रूप में भूल चतुरता अति भोरे ह्वै जाहिं।
पूछैं श्याम प्रिया सों भोरे
कौंन बसैं अँखियन में चोरे
अँखियन में घर कर बरजोरे
प्रिया कहैं पहले तुम प्यारे हमकूँ देहु बताहि।
श्याम नैन में कौन बसी हैं
चन्द्रमुखी कलिका विकसी है
ओठन पै कछु मन्द हंसी है
नैन बसेरो करि रस घातें तुम कूँ कहा सिखाहिं।

कहैं श्याम तुम बसो नैन में
तन में मन में औ प्रानन में
प्यारी मेरे रोम-रोम में
पहले तुम पीछे हम तब ही राधेश्याम कहाहिं।
प्रिया कहैं तुम नैनन तारे
मेरे नैनन के उजियारे
तन मन प्रान तुमहि पर वारे
राखूँ श्याम केश माथे पै बेनी तुमहि गुहाहिं।।

------o------

दाऊजी

यमुना लहर-लहर लहरावै दाऊ तट पै रास रचाय।।

रथ चढ़ दाऊ आये ब्रज को
कियो प्रणाम नंद यशुमति को
हंस भेंटे सब गोप सखन को
सखा कहें दाऊ ब्याहे ते ब्रज को दियो भुलाय।
गोपी बोली निठुर कन्हैया
चतुर बड़ो है वह छलबलिया
प्रीति डोर तोर्‌यो निरमोहिया

हरि संदेश कह्यो दाऊ ने धीरज दियो बंधाय।
यमुना तट उजियारी छाई
वरुण पुत्रिका वारुणी आई
महक उठ्यो सब वन रसदाई
जल क्रीड़ा को दाऊ टेरैं यमुना आवै नांय।
हल ते खेंची यमुना आई
करी क्षमा छोड़ी यदुराई
ऋतु बसंत विहरे सुखदाई
लक्ष्मी ने नीलाम्बर दीयो गहने हार धराय।।

------o------

ब्रज के राजा इन को कहियत,
दीनदयाल बड़े बलराम।।
गोरो अंग चमक बिजली सी
नीलो बसन मेघमाला सी
माला बड़ी इन्द्र धनुषी सी
जामा कठुला कंकण हाथन लकुट सुनहली थाम।
राम कृष्ण गोपालक ब्रज में
खेलैं खेल अनेक सखन में
यमुना तट और कुंज वनन में

नौबत बाजै बजै नगाड़ौ सदा ही धूमस धाम।
राम कृष्ण ये दोनो भैया
संग संग नांचैं ता ता थैया
ग्वाल बाल ढफ ढोल बजैया
बंशी सींगी तुरही बाजै रस बरसै अविराम।
माखन मिश्री भोग लगावै
कमलन की माला पहरावै
लाल नेत्र वारुणी छकावै
रसिया बड़ो रसीलो छैला अलबेलो है गाम।।

------o------

ता ता थेइया ता ता थेइया नाचैं राम गुपाल।।
दाऊ गावै मोहन नाचै मोहन गावै दाऊ नाचै
ठुमका दै दै नाचै देवै हाथन ते करताल।
दोऊ गावैं ग्वाला नाचैं, ग्वाला गावैं दोऊ नाचैं
नाचैं गावैं हंसैं हंसावैं रंग रंगीले ग्वाल।
होड़ा होड़ी भयी लड़ाई, सब में है गाई हाथापायी
दाऊ ते तब न्याय कराई, नाचैं गावैं सबै भुलाई
ऐसे खेलैं खेल सबै मिल बछरन के प्रतिपाल।।

यमुना तट

अब घर कैसे जाऊं मेरी माय, चुनरिया भीज गई।।

सखी री पनियाँ को निकसी
पहुँच यमुना पै गई, अब घर कैसे..।
सखी री न्हाय भरी गगरी
गगरिया सीस लई, अब घर कैसे..।
सखी री पतरी कमर लचकै
गगरिया भारी भई, अब घर कैसे..।
सखी री औचक आये श्याम
लकुटिया तान लई, अब घर कैसे..।
सखी री बरज रही कर जोर
गगरिया फोर दई, अब घर कैसे..।
सखी री भीज गई सबरी
जुलम की बात नई, अब घर कैसे..।
सखी री पूछैगी घर की
कहाँ अंगिया भिजई, अब घर कैसे..।।

------o------

यमुना लहर-लहर लहरावै कान्हा दीजो पार लगाय।

जब यमुना टखने लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरी पायल भीजी जाय।
जब यमुना घुटुमन लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरी साड़ी भीजी जाय।
जब यमुना जांघन लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरो लंहगा भीजो जाय।
जब यमुना कमरन लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरी तगड़ी भीजी जाय।
जब यमुना छतियन लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरी चोली भीजी जाय।
जब यमुना गरवा लों आई
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मेरी चूनर भीजी जाय।
डूब न जाऊं कुंवर कन्हैया
मेरी बांह पकर गिरिधारी, मोय लीजो अधर उठाय।

------o------

अरे ह्यां गहरो पानी नंद के,
मेरी लीजो बांह पकर के।।

अरे नंद के मोय पकरियो नहिं तो मैं बह जाऊंगी,
भारी गहनन बोझ भरी मैं तेरी हा-हा खाऊंगी,
जल्दी ऐयो बह रही यमुना धार सरर सर करके।
नीली यमुना नीलो पानी नीलोई तेरो रंग है,
बहती धारा रुक जावै जब बंशी मधुर बजावै है,
एक बार फिर फूंक लगैयो बंशी होठन धरके।
अचक पकरियो मेरी कलैया बहुतइ नरम-नरम सी है,
वा दिन तनक मरोरी तैंनें अब ताईं वो दूखै है,
दै गलबैया अचकै लै गये ऊपर हाथ पकर के।।

------o------

बरसानो रसमय बरसानो।।

राधा प्रेममयी तहां खेलत, कन कन रस कौ थानो
रस ही खानो रस ही पानो, रस ही रस सरसानो
बहुत दिना ते रहि बरसानो, अजहूं रस नहिं जानो
अब भव में कहां जाऊं रसिकनी, यह तव नाम हंसानो
वास दियो अब देहु रास रस, निर्मल करि मनमानो।।

धाम

बरसाना

जै जै बरसानो गाँव जहं राधा रानी राज रहीं।।
पर्वत ऊपर महल मणिन कौ
जाके आगे त्रिभुवन फीकौ
ब्रह्मा रुप धरें पर्वत कौ
श्री चरनन को है धाम जहं राधा रानी..।
इत में मन्दिर दान बिहारी
ह्यां पै दान दियो पिय प्यारी
देत परस्पर कौतुक भारी
ह्यां रस देवे कौ काम जहं राधा रानी..।
गढ़ विलास की चौटी समतल
ऐसी प्रीति बढ़ी ह्यां निश्चल
राधा माधव खेलैं सब थल
अति सुन्दर छटा ललाम जंह राधा रानी..।
मोर कुटी की शिखर निराली
जंह बैठीं वृषभानु की लाली
नाचैं श्याम बजावैं ताली

धर मोर रूप अभिराम जहं राधा रानी..।
उत में मन्दिर मान बिहारी
मान कियो जंह राधा प्यारी
पकरें चरन जाय गिरधारी
मत रूसौ मानिनि भाम जंह राधा रानी..।
ब्रह्माचल पर्वत मन भायौ
सब शिखरन की लीला गायौ
लीला नित्य यहाँ दरसायौ
जै गांवैं राधा नाम जहं राधा रानी..।

------o------

राधा रानी को है बरसानों, रंगीलो बरसानों।।
राधा महारानी जंह राजैं
श्याम करैं अगवानों, रंगीलो बरसानों।
पीरी पोखर प्रेम सरोवर
भानोखर को न्हानो, रंगीलो बरसानों।
जहाँ भानुगढ़ भानु भवन है
मन्दिर है जगजानों, रंगीलो बरसानों।

ओढ़ चूनरी प्यारो आवै
सखी वेष को बानों, रंगीलो बरसानों।
जंह होरी की गली रंगीली
लठामार मनमानो, रंगीलो बरसानों।
जहाँ खोर सांकरी रसीली
होय जहाँ दधि दानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ विलास दान गढ़ सोहै
रसलीला रसखानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ रंगीलो गहवर वन है
नित्य रास कौ थानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ निराली मोरकुटी है
मोर नाच नचवानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ मानगढ़ प्यारी रूठै
होवै मान मनानों, रंगीलो बरसानों।।

------o------

सबसौं सुन्दर है बरसानों ब्रज में राधा रानी कौ।।

जहाँ बिराजैं राधा रानी
जाकी श्याम करैं अगवानी
महिमा वेदन हू नाय जानी
पर्वत ऊपर मन्दिर चमकै सब जग जानी कौ।

खोर सांकरी बड़ी रसीली
दधि लै चलीं कुंवरि गरबीली
सखियाँ संग में बहुत हठीली
आगे मोहन गैल रोक दियौ रूप लुभानी कौ।

दैजा दान कुंवरि रसिया कौ
पीत पिछोरी कटि कसिया कौ
कुँवरि हँसी लखि मन बसिया कौ
घूँघट में ते छीन लियौ मन वा मनमानी कौ।

गहवर वन की लता-पतन में
बिहरें राधा मोहन वन में
फूले-फूले तन में मन में
बड़े-बड़े सुर नर मुनि तरसैं या रजधानी कौ।।

श्री बरसानों रस बरसानों राजै राधा अलबेली।।

जानें बस में कियौ विहारी
जैसे फूल कमल भँवरा री
रस की पैनीं मार दुधारी
ऐसी प्रीति बढ़ी ज्यों नदिया सावन में रेली।

दयामयी दीनों की श्यामा
मोहन गावैं राधा नामा
पूर्ण ब्रह्म की पूरण कामा
रंग रंगीले खेल रस भरे मोहन संग खेली।

जाकी लीला कहत न आवै
गुप्त जान शुकदेव न गावै
कृपा बिना कोइ समझ न पावै
प्रेम खिलौना राधा माधव करैं प्रेम केली।

गहवर वन की भूमि रसमयी
लता पता सब साज रसमयी
सखी सहचरी बनी रसमयी
गहवर कुंजन फूल बिछौना छाई रसबेली।।

ब्रज तो है प्रेम बजार रे, सौदागर श्याम घरन डोलै।।

पर्वत ऊपर भानु महल है
ऊँची जाकी किवार रे, सौदागर श्याम..।
महलन राज रही महारानी
भोरी भानु दुलार रे, सौदागर श्याम..।
राधा नाम धाम बरसानो
अलबेली सरकार रे, सौदागर श्याम..।
ठाड़े बाट तकें मनमोहन
कब खूटैगो द्वार रे, सौदागर श्याम..।
सखी दलाल ऐंठ ते बोलैं
कर रहे हरि मनुहार रे, सौदागर श्याम..।
मोर मुकुट कूं चरण छुवावै
ऐसे हैं रिझवार रे, सौदागर श्याम..।
द्वार खुलेपै भीतर जावै
जहाँ दियो अपनपौ वार रे, सौदागर श्याम..।
ऐसी प्रेम मयी ब्रजभूमी
ऐसो रस व्योहार रे, सौदागर श्याम..।।

झुक ही गयो सिर देखी जो शिखर,
बरसाने पर्वतवारी की।।

येई वो पर्वत ब्रह्माचल
जंह राधे खेली हैं सब थल
आँख लगी उधर, देखी जो शिखर..।
ये वही भानुगढ़ की चोटी
रहै राधे भागन की मोटी
चलो महलन पर, देखी जो शिखर..।
जैकारे हों वृषभानु भवन
जै राधे गावैं भक्त सुजन
जै भानु कुँवर, देखी जो शिखर..।
रसभरी सांकरी की गलियां
दधिदान दियो ब्रज की सखियां
लियो नंद कुंवर, देखी जो शिखर..।
ये वही रसीलो गहवरवन
जहां रास विलास करैं दोऊ जन
रस बरसै झर, देखी जो शिखर..।।

गहवर वन

गहवरवन की कुञ्ज गलिन में, खेलैं राधा कुँवर कन्हैया।।

घिर रही घटा जु कारी कारी
नाचन लगे श्याम बनवारी
मोर नाच नाचैं गिरिधारी
मोर कुटी की शिखर बन गई, पवन चलै पुरवैया।
ऊपर मान कियौ है प्यारी
चरनन कूँ पकरैं गिरिधारी
मान मनावन कौ रस भारी
मन्दिर मान बन्यौ पर्वत पै झांकी है सुखदैया।
हरी लता फूलीं फुंलवारी
झूम झूम रही डारी डारी
खिल रही रैन चन्द्र उजियारी
प्यारी प्यारे नांचैं हँस हँस रीझि देत गलबैंया।
दक्षिण कुण्ड दोहनी दमकै
उत्तर श्रीजी मन्दिर चमकै
पूरव मोर बिहारी झमकै
पच्छिम मान बिहारी मान मिलन रस सिन्धु बहैया।

मोर कुटी

पर्वत पै कोंहक भयो भारी, गहवर वन बोलै मोर।।

उठे उनींदे गहवर कुञ्जन
वन विहरैं दोउ भोर, पर्वत पै कोंहक..।
मोर कुटी बैठे प्यारी संग
मोहन चित के चोर, पर्वत पै कोंहक..।
हरियाली पै झुकी बदरिया
पुरवैया झकझोर, पर्वत पै कोंहक..।
प्यारे-प्यारी कौ पटुका और
उड़ै चुनरिया छोर, पर्वत पै कोंहक..।
उड़-उड़ आय गये सब मोरा
देखन युगल किशोर, पर्वत पै कोंहक..।
श्यामा मोर मंडली सब
नचवैं नैनन की कोर, पर्वत पै कोंहक..।
पंखन खोलैं ताली पै सब
नाचैं मण्डल जोर, पर्वत पै कोंहक..।
श्यामा की पैजनियाँ बाजै
मुरली हरि की घोर, पर्वत पै कोंहक..।।

नन्दगाँव

ऊँचे नंदीश्वर पर्वत पै सोहै मोहन को नन्दगाँम।।
शिव नें रूप धर्‌यो पर्वत कौ
लें हरि पद रज की आशा कौ
कृष्ण दरस हित आये ब्रज कौ
नंदभवन चोटी पै चमकै मणिमय सुन्दर धाम।
जसुदा लाला नांहि दिखाये
शिव ने रोवत श्याम हँसाये
गंडा हरि के हाथ बंधाये
मैया वास दियो शिव महलन उत्तर द्वार विराम।
ऊँचे चारों द्वार महल के
चार छत्तरी हैं द्वारन पै
ऊपर ते दरसन सब ब्रज के
दक्षिण बरसानौ दमकै जहं राधा दुलहिन भाम।
हरि दाऊ राजैं मन्दिर में
नन्द जसोदा दोउन संग में
श्रीराधा दुलहिन की छवि में
चारों ओर बसे मन्दिर के सखा खिलावैं श्याम।।

मोहन वृन्दावन के राजा राधा महारानी सुकुमार।।
बीस कोस वृन्दावन गायो
बरसानों गहवर तक छायो
गोवर्द्धन हू वन में आयो
ठौर-ठौर पै रस की लीला करी जुगल सरकार।
योजन पाँच बन्यो वृन्दावन
मुख्य भूमि तट यमुना कंकन
रास विहार होय जंह कुंजन
विधि हरि हर दुर्लभ रजधानी नित बरसै रसधार।
सृष्टि चक्र में यह बन नाहीं
माया की गति नहिं अवगाहीं
काल शक्ति वन में नहिं जाहीं
महाप्रलय ब्रज-धूरि न नासै जगमग ज्योति अपार।
भूमि चिन्मयी है अविनासी
हेममयी मणिमयी प्रकासी
दिव्य लता द्रुमबेलि विलासी
परब्रह्म हू धाम ज्योति है सब ऋतु सदा संवार।

ब्रह्मा देख्यो वैभव वन कौ
रमा चतुर्भुजमय कन कन कौ
अगनित विधि सेवत रज कन कौ
है चौमुहा भयो जड़ सौं गिरि वृन्दा भूमि मंझार।।

------o------

गोकुल में सोर भयो भारी, वृन्दावन बोलें मोर।।

उड़-उड़ मोर कदम पै चड़ गये
बैठे पंख मरोर, गोकुल में सोर..।
टप-टप पेंच गिरैं जमुना में
बीनैं नन्द किशोर, गोकुल में सोर..।
उन पेंचन को मुकुट बनायौ
पहिरैं श्याम किशोर, गोकुल में सोर..।
धन्य-धन्य ये ब्रज के मोरा
जाय रीझैं माखन चोर, गोकुल में सोर..।
नाचैं देख देख घनश्यामहि
कुहकैं सुन्दर घोर, गोकुल में सोर..।।

------o------

अरी नन्दगाँव बड़ौ है प्यारौ, जहं खेलै वंशी वारो।।

ऊँची शिखर नन्दबाबा की ऊँचौ भवन विराजत है,
चारों ओर गोप गोपिन सों बस्यो गाँव छवि पावत है,
नंदीश्वर पर्वत बन शिव ने हरि चरनन उर धारौ।
नन्द बाबा जसुदा मैया बलदाऊ लाड़ लड़ावत हैं,
सुबल सुबाहु तोष मधु मंगल टोल सखन कौ राजत हैं,
नौ लख गाय बंधी खूंटा पै गाय चरावनहारो।
पावन सर यशुदा कुंड ललिता कृष्ण कुण्ड मधुसूदन है,
छप्पन कुण्ड आचमन ऊद्धव क्यारी और आसेश्वर हैं,
टेर कदम चढ़ गाय बुलावै या ब्रज कौ रखवारौ।
नन्दगाँव बरसानों सजन सनेही मीठो नातो है,
लाल लाड़िली प्रीति ब्याह कौ आनन्द रसिक सुहातो है,
कृपा करें जब हिय में आवें यह ब्रज रस उजियारो।।

------o------

वात्सल्य माधुरी

माखन खाय लै खूब अघाय, गोपिन के घर मत जैयो।।

यों कहै यशोदा मैया
सुन लै तू लाल कन्हैया
मैं तेरी लऊं बलाय, गोपिन के घर..।
लौनी की भरी मथनियां
तेरे आगे धरी कन्हैया
मिश्री मन कर लेय मिलाय, गोपिन के घर..।
तेरे बाबा नंद बिरज में
है नाम बड़े गोपन में
कारो नाम न तू करवाय, गोपिन के घर..।
सुन बोल उठयो नंदलाला
ये झूठी हैं ब्रजबाला
इनने गजब ही दीयो ढाय, गोपिन के घर..।
यो मोकूं टेर बुलावैं
ओ हाथ पकर ले जावैं
सोगंध तेरी देंय खवाय तू इनपै मत पतियैयो।।

मेरो कनुआ आँखिन तारो है, कोई गारी भूल न दीजो।।

लहुरो सो मेरो भोरो-भारो
मेरो प्राण अधारो री, कोई गारी..।
जाको जितनों दूध ढुरायो
मोते चुकौ उधारौ री, कोई गारी..।
दुगनों तिगुनों लेहु सौगुनों
दूध दही कौ गारौ री, कोई गारी..।
अपनों सो बालक तुम जानों
घोंटुन चोंहकायो मेरो री, कोई गारी..।
तुम्हरो ही आशीष फल्यो जो
नन्द महर कौ बारौ री, कोई गारी..।
मांगू भीख पसारे आँचर
मेरी ओर निहारो री, कोई गारी..।।

------o------

बांध्यो मैया यशोदा अपनों लला।

कोमल कर रसरी ते बांध्यो डरपै लला।।
रोय रोय अंसुआ ढरकावै
हाथन नैंना मींड़त जावै
सबरे मुख कजरा फैलावै

हिलकी दै दै लेय उसासें रूंध्यो गला।
चम्पकली, कुंदकली आयीं देखन
र भई ब्रज की जुरी सखियन
बंधे श्याम ठाड़े है आंगन
बोलीं मत बांधो तुम छाड़ो अपनो लला।।

------o------

श्याम चराय ला गैया, तोय माखन दूंगी।।

माखन दूंगी मिसरी दूंगी
दूंगी दूध मलैया, तोय माखन दूंगी।
दूर न जैयो पास चरैयो
असुरन को डर भैया, तोय माखन दूंगी।
जमुन न जैयो नाय नहैयो
काली तहां रहैया, तोय माखन दूंगी।
मिलके रहियो सखन ते न लड़ियो
सब रहियो इक ठैया, तोय माखन दूंगी।
दाऊ संग रहियो, अलग न जैयो
मै तेरी बलि जैंया, तोय माखन दूंगी।
जल्दी ऐयो देर न करियो
कहै जसोदा मैया, तोय माखन दूंगी।।

श्री राम

जयमाल कर लैकें चली जनक दुलार।।

राम ने तोर्‌यो धनुष शम्भु कौ, सब करैं जै जैकार।
हौले चलीं सीता चल्यो न जावै, तन कांपै सुकुमार।
बैयां पकरि सखि आगे चलावें, सीता भई लाचार।
देवी ते मांग्यो वर मिल्यो सोई आयो, यह समय न टार।
राम के आगे जाय ठाड़ी भईं सखीं, सब गावें मंगलाचार।
गुरुतन देख राम शीश झुकायौ, माला दियो गर धार।
सियावर राम चन्द्र जय कहैं सब, जाऊँ जोरी बलिहार।।

------o------

लालन धीरे धीरे चलिये लली की गलियाँ।।

ये तो नाहिं अवधपुर नगरी
लालन ये चिकनी मिथिला गलियां।
है गोरे जनक औ सुनयना गोरी,
लालन गोरी हमारी सिया ललियां।
कौसल्या है गोरी औ गोरे दसरथ,
लालन तुम कैसे भये सांवरे वरनियां।
गोरी कौसल्या ने गोरी खीर खाई,
लालन कहाँ ते लाई सांवरो रंगिया।।

देखो देखो आये रघुवीर बगिया में।।

सखी री फुलवा बीनन गुरू काजे, विश्वामित्र काजे
संग सोहे लखन छोटो बीर बगिया में।
सखी री दशरथ के ये ढोटा, राजा के ये ढोटा
खेलैं-खेलैं सरजू के तीर बगिया में।
सखी री दोनो के हाथ धनुष है, हाथ धनुष है
बांधे कांधे पै तरकस तीर बगिया में।
सखी री श्याम वरन बड़ भैया, वरन बड़ भैया
छोटे भैया को गोरो सरीर बगिया में।
सखी री माथे मुकुट कानों कुडल, मुकुट कानों कुडल
इन्हें देखन को लागी भीर बगिया में।
सखी री सीता के योग लला राम, कुँवर लला राम,
जगदंबा हरैगी पीर बगिया में।।

------o------

आज छोड़ के अयोध्या चलै हैं रघुराई।।

राज महल के सब सुख छोड़े
छोड़ी सरयू नदी सुखदाई, आज छोड़..।
दशरथ पिता बिलखते छोड़े
छोड़ी कौसल्या सी माई, आज छोड़..।
ऐसो पाठ पढ़्यो दासी ते
कैकई ने वन दिये हैं पठाई, आज छोड़..।
फूलन सों सुकुमारी सीता
वन को लै पति संग हरषाई, आज छोड़..।
सीता राम चरण अनुरागी
संग चले लछमन से भाई, आज छोड़..।
अब के बिछुरे कबहि मिलेंगे
इनकी विपति कही नहि जाई, आज छोड़..।।

------o------

लंका जीत गये श्री राम मार्‌यो रावण नौलखिया।।

एक लख पूत सवा लख नाती
ताके घर में दिया न बाती
मंदोदरी पीट रही छाती
दस सिर बीस भुजा गोदी लै रोवै वह दुखिया।
परनारी चोरी ते लायो
सबने तोय बहुत समझायो
तैनें प्रभु ते रार बढ़ायो
हनूमान नें लंका फूंकी बन्यो दूत खुपिया।
बांध्यो काल जीत पाटी ते
सूरज कांपै तेरे भय ते
तैंतीस कोटि भजे सुर रण ते
स्यार गीध सिर खावें तेरे भिनख रही मखियां।
नांय मानी छोटे भैया की
मारी लात सीख सुन हित की
गयो शरण वह राम चंद्र की
लंका राज विभीषण पायो अटल छत्र सुखिया।

आज के चोर

इनको कृष्ण रूप ही जानो, धन धन ब्रज मण्डल के चोर

ब्रज में साधू भजन कूँ आवैं
कर वैराग्य जुगल कूँ ध्यावैं
सेवैं नाम रूप गुन गावैं
भगवत् भक्ति लेश ते हू उनको जस फैले घोर।
भजन प्रताप सिद्धि सब आवैं
संग ऐश्वर्य बहुत ही लावैं
चेला चेली फौज जुरावैं
घुटन लगैं तब माल मलाई लड़ुआ लुड़कैं जोर।
माया वश तब भजन न होवै
संग्रह की आदत बढ़ जावै
इन्द्रिय सुख में हरि बिसरावै
तोंदू सेठन कारन सेठ सँवरिया ते लई तोर।
पतन देख के प्रभु तब धावैं
चोरन कौ सौ रूप बनावैं
पाँच सात ग्वाला संग लावैं
घुसैं रात में सबही माया लेवैं माल खखोर।

कबहू कबहू मार लगावैं
देंय दण्ड और त्याग सिखावैं
भूल्यो भयो फेंर सम्हरावैं
घर ते आयौ हरि दर्शन कूँ ह्यां बन गयो छिछोर।
रहै विरक्त संत शरनन में
गुरूजन के कठोर शासन में
होय न पतन कबहु भावन में
प्रतिपल बढ़ै भजन औ निश्चय पावै जुगल किशोर।

------o------

एक दया कौ रह्यो भरोसो।।

सब विधि भयो निराश राधिके दीन और कौ मो सो
तू है परम दयाल स्वामिनी, भोरी और न तो सौं
आस पर्‌यो गहवर वन चाहे छांड़ो चाहे पोसो।।

------o------

हौं तेरी तेरी हौं रहौंगी।।

एक दिना या ब्रज में बसिके चरनन प्रीति लहौंगी
कोई कछू कहै दुर्वचनन सुनि नहिं नेंक डरौंगी
सहि हौं सब कुछ मार धार हू पर नहिं प्रीति तजौंगी।।

परिशिष्ट

मेरे कनुवा को मनुवा लग्यो है कै नांय, मोय सांची बताय।।

सुन ऊधो तू सूधी कह दे
वाको मथुरा भाई कै नांय, मोय सांची..।
काखन खावै माखन मिसरी
ह्वां माखन मिसरी मिली है कै नांय, मोय..।
ह्यां तो रास रचातो कान्हा
ह्वां वाय गोपी मिली है कै नांय, मोय..।
ह्यां तो चरातो गैया बछरा
ह्वां वाय गैया मिली है कै नांय, मोय..।
ह्यां तो बजातो बांस बंसुरिया
ह्वां वाय बंशी मिली है कै नांय, मोय..।
ह्यां तो कान्हा मटकी फोरै
ह्वां वाय मटकी मिली है कै नांय, मोय..।।